सृष्टिचक्र में आत्मा के पांच स्वरूपों की अनुभूति करना

योगाभ्यास का लक्ष:

विश्व नाटक में हमारा पार्ट आदि से अंत तक का ऑलराउंड है | सृष्टि चक्र के आरंभ से, अर्थात् स्वर्णिमयुग से, लेकर सृष्टि नाटक के अन्त, अर्थात् कलयुग तक, 84 जन्मों का पूरे 5000 वर्ष तक का हमारा पार्ट नुंधा हुआ है। यह धरती रंगमंच है जिस पर विभिन्न देह-रूपी वस्त्र धारण कर हम आत्माए अपनी अपनी भूमिका निभाते हैं। हम आत्मायें इस साकारी दुनिया में निराकारी दुनिया से आई हैं जो शांति की दुनिया है, मुक्ति की दुनिया है| हमारी आत्मा में हमारे पार्ट की संपूर्ण नुंध है। अपनी भूमिका के दौरान इस चक्र में हम पांच महत्वपूर्ण स्वरूप धारण करते हैं। बाबा कहते हैं कि इस संगमयुग पर इन पांच स्वरूपों को इमर्ज कर उनकी दिव्य अनुभूति तुम्हे करनी हैं। हमारे लिए यह बहुत ही महत्वपूर्ण योगाभ्यास है, जिसे हमें बार-बार करना चाहिए।

योगाभ्यास:

आइए हम इन पांच स्वरूपों की गहन अनुभूति करने के लिए यह योगाभ्यास करें | हमारे यह पांच स्वरूप हैं:

1) बीज स्वरूप - जब हम शान्तिधाम में होते हैं
2) देवी-देवता स्वरूप - जब हम सतयुग में अपने जन्म व्यतीत करते हैं
3) पूज्य स्वरूप - जब द्वापरयुग में भक्त अनेक आशाओं से हमारी भक्ति करते है
4) ब्राह्मण स्वरूप- जब हम शिवबाबा के संग संगमयुग में होते हैं
5) फरिश्ता स्वरूप - जब हम सूक्ष्मलोक में रहते हैं

हर स्वरूप के साथ पांच मुद्दे संलग्न है। इसीलिए हर स्वरूप की अनुभूति हमें इन पांचो बातों में करनी है| कुल मिलाकर अनुभूति के पचीस मुद्दे हो जाते है। आइए हम एक-एक करके इन स्वरूपों को प्रकट करें और उसकी अनुभूति करें|

स्वरूप	धाम	काल	अवस्था	अनुभूति
बिज	परमधाम	अनादि	निराकारी	शान्ति
देवता	सुखधाम	आदि	निर्विकारी	सुख
पूज्य	भक्तिधाम	मध्य	अलंकारी	प्रेम
ब्राह्मण	संगमधाम	अंत	निरहंकारी	शक्ति
फरिस्ता	सूक्ष्मधाम	अनंत	आकारी	आनंद

आराम से बैठें और कुछ गहरी सांसों के साथ देह को ढीला छोड़ दें। अब अपना ध्यान अपने मस्तिष्क के केंद्र पर केंद्रित करें। इस स्थान पर स्वयं को देदीप्यमान ज्योतिर्बिंदु के रूप में देखीए और अपने आत्मिक स्वरूप का अनुभव करें। अब यह निश्चय करें कि .....

"मैं इन पांच जड़ तत्वों से बनी हुई यह भौतिक देह नहीं हूँ, बल्कि मैं एक आत्मा हूं,... दिव्य प्रकाश का एक बिंदु हूँ.... भौतिक देह से अलग हूँ....यह देह मेरे लिए एक वस्त्र मात्र है.... जन्मों जन्म इस सृष्टि चक्र में मेरी भूमिका निभाने के लिए एक साधन मात्र है.... हर जन्म मैं एक नई देह धारण करता हूं और मेरी भूमिका चलती रहती हैं.... मैं एक अजर, अमर और अविनाशी आत्मा हूँ.... मेरे 84 जन्मों की भूमिका का पूरा रिकॉर्ड मुझ आत्मा में भरा हुआ है....

१ बीज स्वरूप की अनुभूति:

"मैं आत्मा मेरे इस विश्वनाटक के अभिनय के प्रारंभ से पहले मेरे निजधाम परमधाम में होती हूँ.... वहां में अपने बीज स्वरूप - बिंदु रूप में स्थित होती हूँ.... यहाँ मैं अपनी पहचान निराकारी प्रकाशबिंदु स्वरूप में बनाए रखती हूँ.... यहाँ इस शान्ति की इस दुनिया में कुछ भी साकार नहीं है वा कोई आकार भी नहीं है.... चारों और अनंत तक सुनहरा लाल प्रकाश ही प्रकाश फैला हुआ है.... बीज स्वरूप में, मैं आत्मा यहाँ गहरी शांति का तथा मेरी संपूर्ण मुक्त अवस्था का एहसास कर रही हूँ.... यह मेरी सुसुप्त (dormant) और गुप्त (latent) अवस्था है..... समय के संदर्भ में ये मेरी अनादी कालातीत अवस्था है....

१. देवी देवता स्वरूप की अनुभूति:

"मैं इस सृष्टि चक्र में अपना पार्ट निभाने के लिए अपनी यात्रा की शुरुआत स्वर्णिमयुग की शुरुआत से ही करती हूँ.... मैं परमधाम को छोड़कर चमकते सितारे के रूप में पृथ्वी पर उतरती हूं.... और मेरा पहला जन्म देवी-देवता के रूप में, प्रथम लक्ष्मी नारायण के साम्राज्य में लेती हूँ.... समय के संदर्भ में यह मेरा आदि समय का पार्ट हैं.... यह मेरी सम्पूर्ण निर्विकारी अवस्था

है.... यहाँ मैं उच्चतम स्तर की पवित्रता, शांति और समृद्धि से संपन्न हूँ..... यहाँ मेरा भौतिक शरीर अत्यंत सुंदर, पवित्र और पूरी तरह से स्वस्थ है..... यहाँ प्रचुर मात्रा में सुख - संपत्ति है.... और मैं सभी मूल्यों, गुणों और शक्तिओं से भरपूर हूँ.... प्रकृति के तत्व भी पूरी तरह से पवित्र हैं और हर संभव रूप से मेरी सेवा करते हैं.... स्वर्णिमयुग में, मेरे यह देवता स्वरूप में, मैं 8 जन्मों के लिए अपनी भूमिका निभाती हूं....."

३.पूज्य स्वरूप:

"सृष्टिचक्र के आदि के 2500 वर्षों में, स्वर्णिम युग तथा रजतयुग में, अपने 20 निर्विकारी जन्मों को पूरा करने

के बाद, द्वापरयुग का प्रारंभ होता है... यहाँ सब आत्माएँ देह-अभिमानी हो जाती हैं, आत्मिक स्मृति से विमुख हो जाती है..... इसलिए सभी आत्माएं विकारों के वशीभूत हो जाती हैं और पाप करना शुरू कर देती हैं.... इसके परिणामस्वरूप, आत्माएं दुःख, रोग, शोक, संताप, अशांति से ग्रस्त हो जाती हैं.... इसके कारण प्रत्येक की बुद्धि इश्वर की और जाती हैं....

भक्ति मार्ग की यहाँ से शुरूआत होती है.... लोग बड़ी उम्मीदों और मनोकामनाओं के साथ मेरी अलंकारों से सुशोभित मूर्तियों की पूजा शुरू करते हैं.... यह मेरा पूज्य स्वरूप है.... यहाँ मेरी भूमिका, अपने भक्तों की मनोकामनाओं को पूर्ण करने की है.... मंदिरों में, अपने पूज्य स्वरूप

के सामने, में मेरे भक्तो की लंबी कतार देख रही हूँ.... वे पूर्ण श्रध्दा से अपनी इच्छाओं तथा मनोकामनाओं को पूरा करने के लिए अनुरोध कर रहे हैं.... उनकी निष्ठा, श्रध्धा, समर्पण भाव के आधार पर मेरे यह पूज्य स्वरूप द्वारा वो पूर्ण भी हो रही हैं.... भक्तिधाम का यह मेरा मध्य कालीन अलंकारी स्वरूप है....."

४. ब्राह्मण स्वरूप:

"समय चक्र के अंत में, अर्थात कलयुग के अंत में, मैं तमोप्रधान बन जाती हूँ.... इस समय मेरे रूहानी परमपिता शिवबाबा परमधाम से अवतरण करते हैं.... और प्रजापिता ब्रह्मा के साकार माध्यम से मुझे आध्यात्मिक ज्ञान और योग की शिक्षा से उजागर करते हैं.... यहाँ संगमयुग में, मेरा यह ब्राह्मण स्वरूप में नया द्वीज जन्म है.... बाबा की श्रीमत का पालन करते और

राजयोग का अभ्यास करते, मैं सतोप्रधान स्थिति की तरफ ऊपर उठना प्रारंभ करता हूं.... यहाँ मैं सर्वशक्तिमान प्यारे शिवबाबा के साथ अपने सभी संबंधों का आनंद ले रहा हूँ.... और परम शांति, पवित्रता, प्रेम, आनंद, सुख और शक्ति का सहज अनुभव कर रहा हूँ..... यह ब्राह्मण स्वरूप मेरी आत्मा का हीरे जैसा स्वरूप है और सबसे उच्चतम स्वरूप हैं.... संगमधाम का मेरा यह निरहंकारी स्वरूप है....."

५. फ़रिश्ता स्वरूप:

"पुरे कल्प के समय चक्र में मेरा अंतिम स्वरूप फ़रिश्ता स्वरूप है.... बाबा के ज्ञान और योग के अभ्यास से मेरी बुद्धि अब दिव्य हो गई हैं.... मैं बाबा की श्रीमत अनुसार राजयोग का नित्य अभ्यास करती हूँ.... मैंने सभी मूल्यों और सद्गुणों को

धारण किया हैं..... मैं अब आसानी से अपने स्वयं की देह, देह के संबधियों तथा इस भौतिक दुनिया से उपराम हो सकती हूँ.... अब में अपने सूक्ष्म देह को धारण कर अपने डबल लाईट फरिस्ता स्वरूप में स्थित हो चुकी हूँ..... इस रूप में मुझे डबल लाइट का अनुभव हो रहा हैं.... यह मेरी सबसे न्यारी और बेहद की स्थिति है.... इस स्वरूप में मैं बहुत ही हल्कापन महसूस कर रही हूँ.... यह मेरा सबसे अलग तथा बेहद का स्वरूप है..... इस स्वरूप में मैं अंतरिक्ष में एवं सूक्ष्म लोक में कही भी उड़कर आवागमन करती रहती हूँ.... इस फ़रिश्ता स्वरूप में मैं अनेकबार सूक्ष्म वतन में अव्यक्त बापदादा से मिलन मनाने, उनके साथ रूह-रिहन करने तथा उनके साथ सर्व संबंधों का आनंद लेने के लिए आते जाते रहती हूँ.....

इस अनादि विश्व नाटक में मेरी पांच स्वरूपों की यह भूमिका सचमुच बहुत सुन्दर, विशेष और उत्तम है.... बहुत बहुत शुक्रिया बाबा...."

ॐ शांति... शांति... शांति...

बी.के. प्रफुलचंद्र (M) +91 98258 92710